Faheem
B.A.III
Paper II

B.A. III, Paper VI
M.A. JOHN

जजमानी व्यवस्था

भारतीय जाति व्यवस्था के ढाँचे, इसकी कार्य प्रकृति और विशेषताओं का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि विभिन्न जातियों के बीच काफी दूरी है। इनमें आपसी सम्बंध नहीं पाया जा सकता है ये जातियाँ अनेक स्तरों पर एक दूसरे से भिन्न हैं। और इस प्रकार प्रत्येक जाति अपने जातिगत नियमों के बन्धन में जकड़ी हुई है परन्तु यह भी एक सत्य है कि विभिन्न जातियों में परम्परागत आर्थिक और व्यवसायिक सम्बंध पाये जाते हैं। अर्थात इनके बीच आवश्यक वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय की एक सुव्यवस्थित परम्परागत प्रणाली पायी जाती है इसी व्यवस्था को जजमानी व्यवस्था कहा जाता है।

भारतीय समाज में जाति व्यवस्था पदसोपान का मुख्य आधार है। यह मात्र व्यक्ति और समूहों के सामाजिक सम्बंधों को ही प्रभावित नहीं करती बल्कि आर्थिक जीवन का केन्द्र बिन्दु है। भारतीय जाति व्यवस्था केवल परम्परागत नियमों, आदर्शों, मूल्यों और विशिष्ट कार्य पद्धति से बन्धी हुई है। जातिगत नियमों का एक ऐसा फ्रेम है जो जन्म से व्यक्ति

को प्राप्त होता है। प्रत्येक जाति की इस व्यवस्था में निश्चित कार्य और व्यवसाय हैं जिनको करके वह अपनी जीविका अर्जित करता है। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि विभिन्न जातियाँ एक दूसरे के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के कार्य और सेवाएँ करती हैं। इस व्यवस्था को ही जजमानी व्यवस्था कहते हैं। इस से यह स्पष्ट होता है कि ग्रामीण समाज में विभिन्न जातियों में घनिष्ठ सम्बंध पाया जाता है।

W. H. Wiser ने मैनपुरी के एक गाँव करीमपुर में जजमानी व्यवस्था का अध्ययन किया और अपने अध्ययन के आधार पर यह पाया कि सामाजिक पदसोपान और परम्परागत पेशों के आधार पर इस गाँव में 15 जातियाँ निवास करती हैं जैसे Brahmins पुरोहितों और अध्ययन और अध्यापन के पेशों में, कहार पानी भरने तथा काछी सब्जी उगाने के पेशों में और इसी प्रकार अन्य जातियाँ अलग अलग पेशों में लगी हुई हैं।

इस प्रकार अनेक जातियाँ अलग अलग नामों से भारत के अलग अलग गाँवों में पायी जाती हैं जिनका निश्चित कार्य है।

Oscar Lewis ने विचार दिया है कि जजमानी व्यवस्था के अन्तर्गत गाँव के प्रत्येक

गाँव के प्रत्येक जातिय समूह से यह आशा की जाती है कि वह अन्य जातियों को कुछ निश्चित सेवा दें प्रदान करें। इस प्रकार जजमानी व्यवस्था में आपसी सेवाओं की एक निश्चित व्यवस्था देखने को मिलती है।

जजमान शब्द संस्कृत भाषा के यजमान का अपभ्रंश है। इसकी उत्पत्ति को यज्ञ से जोड़ा जाता है। यज्ञ करवाने वाले को यजमान कहा जाता है और जो Brahman यज्ञ का कार्य करता है उसे पुरोहित कहा जाता है। इस से जो सेवा लेता है उसे जजमान कहते हैं।

Oscar Lewis के अनुसार "इस व्यवस्था में गाँव के प्रत्येक जाति समूह से अन्य जातियों के परिवारों के लिये कुछ विशेष प्रकार की निश्चित सेवाओं के प्रदान करने की आशा की जाती है।

N. S. Reddy के अनुसार "ये सेवा सम्बंध जो एक वंशानुगत अधिकार से शासित होते हैं, जजमान परजन सम्बंधों के रूप में कहलाते हैं।

वास्तव में जजमानी व्यवस्था, जाति व्यवस्था और उसके कार्य पद्धति से घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई है।

Scanned with CamScanner